पाठ 17. पेड़

पाठ का परिचय

कवि कहते हैं कि पेड़ एक ही जगह पर खड़े रहकर मुसकाते रहते हैं। चाहे जंगल हो, शहर हो, पर्वत हो या फिर तेज़ बिजली कड़क रही हो, फिर भी वे डरते नहीं हैं। वे घबराते नहीं हैं। एक सैनिक के समान डटकर वे खड़े रहते हैं। रंग-बिरंगे गहनों (फूलों) से सजे, वे चाहे जितनी भी गरमी क्यों न हो, उसे सह लेते हैं। ये पेड़ हमें मस्ती में जीने की प्रेरणा ही नहीं देते, बल्कि सुंदर-सुंदर दृश्य भी दिखाते हैं। मीठे फल और रंग-बिरंगे फूल उपजाने वाले ये पेड़ झुककर हमें सज्जनता का पाठ पढ़ाते हैं। कड़ी धूप में ये हमारा साया बनते हैं। हमारा जीवन सरस बनाते हैं। इनकी माया को कोई नहीं जान पाता, क्योंकि ये पहले तो वर्षा लाने में सहायक होते हैं और बाद में हमें वर्षा से बचाने के लिए छतरी बन जाते हैं। कठिन जीवन जीते हुए भी ये खड़े-खड़े मुसकाते रहते हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

पेड़ की तरह ही हमें भी परोपकार का जीवन जीना चाहिए। दूसरों के लिए जीवन जीने का आनंद ही कुछ और है। हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिए। सज्जनता के साथ अपना जीवन जीना चाहिए।

पाठ का वाचन

कविता का सस्वर वाचन किया जाए। बच्चों को अनुकरण वाचन करने को कहें। कविता पढ़ते समय हाव-भाव का पूरा ध्यान रखा जाए। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। कविता का सरलार्थ करें। बच्चों को कविता कंठस्थ करने को कहें। चार या पाँच बच्चे मिलकर समूह में कविता सुनाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- पेड़ हम सभी को क्यों अच्छे लगते हैं?
- पेड़ को दानी क्यों कहते हैं?
- पेड़ हमें क्या सिखाते हैं?
- पेड़ हमें क्या-क्या देते हैं?
- यदि पेड़ न होते तो क्या होता?